पद १२२ (राग: झिंजोटी – ताल: दीपचंदी)

धाकटा राम माझे असे। तया मी वनाप्रति धाडूं कसे।। ध्रु.।। मखाची पाइनी शोभा। लोपते कोटि शशिची प्रभा। कंडलाची

मुखाची पाहनी शोभा। लोपते कोटि शशिची प्रभा। कुंडलाची फांकली प्रभा। तया उपमा द्यावया नसे।।१।। खडे रुततिल कीं पाया। कैसें चालवेल रघुराया। करील निद्रा कवणें ठायां। कशी भोगवेल अशी दुर्दशा ।।२।। कधीं हा राम दृष्टि पडे। म्हणुनी माता स्फुंदस्फुंदोनी रडे। माणिक म्हणे दु:खसिंधूत बुडे। वदावया शोकातें अंत नसे ।।३।।